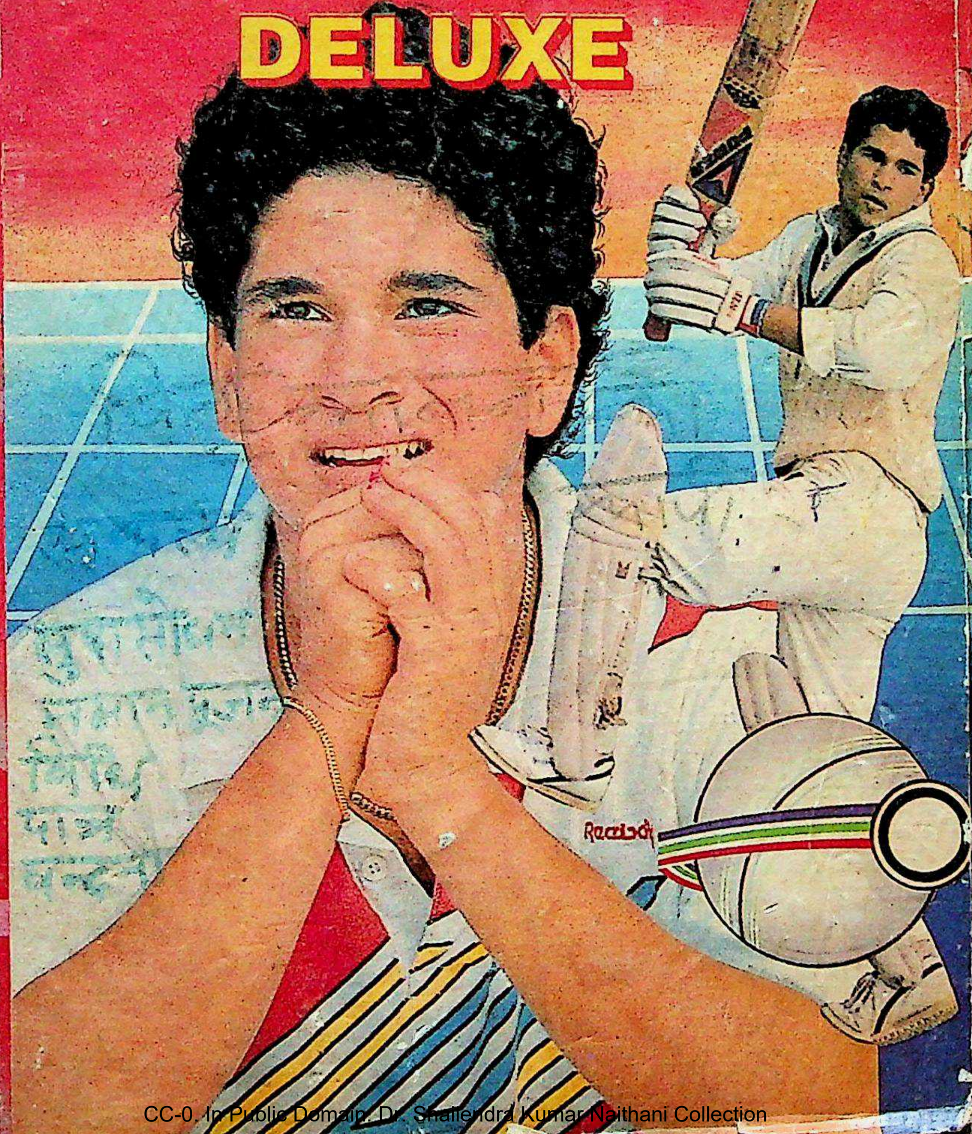
SUPER DELUXE



मोन्सिज सही होनेमें सरीफे की तीन पत्ती पीसकर सुबह खाने के पहले शाम को भी खाने के पहले दे। ४१ दिन

एक मीमा में चार आनेभर पिसी हल्दी दे दोनों टाइम में। जबतक ठीक ना हो तबतक खिलाता रहे।

चन्दन एन्टीबाइक है धाव में ला देने से ठीक हो।

आकवन के पत्तों पर (ॐ ह्रौं) रक्त चन्दन से बेल की लेखनी से लिखे चित्त पत्ते पर और आकवन की समिधा में ही हवन करे।

डाइबिटीज में
पिलुरिसी में
दमा पई डिगरी का हो तो
टी.बी. का सेकिंड
थर्ड स्टेज का हो तो भी

पार्थिव शिव
पार्थिव मूर्ती
आटे की बनाकर
प्राण प्रतिष्ठा कर
पंचोपचार से
पूजन।
डोबर की
प्रतिमा मारन वाले
भगवान की मूर्ति
की प्रतिमा बना
कर पूजे तो पर
प्रयोग कटेगा

प्रतिमा से [illegible]

आम के पटरे पर रखके मूर्ती को

गोबर की प्रतिमा — मारण मे काला फूल

आटा की प्रतिमा — शान्ति करने में लाल फूल

उच्चाटन मन्त्र को पहले जाप करे
तीन हजार जाप दशांश हवन तर्पन मार्जन
सरसो मिर्चा धतुरा काला तिल जौ चावल घी
गुड़ का चिता मे हवन होगा एक हजार आहुति
ॐ श्रीं क्रीं

यह एक्जीमा की पेटेन्ट दवा है

गोपाल ने बताई है।

नीम गुरच

चाकसू बीज, बाउची, अनार की छाल
नीम की गुदी बराबर बराबर मात्रा ले कर

पाउडर बनेगा। आठ आने भर सुबह देना
है पर रात को पाउडर भिगोदे ~~[illegible]~~ एक छटांक
पानी में भिगोदे सुबह उसे मसल कर

छानले इसी को पिलादे। छानन को

घाव पामल दे।

परेज में सिर्फ ४० दिन ~~[illegible]~~ दुध चावल
दे। चीनी ना डाले।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परब्रह्म परमात्मने

अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे
वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि
प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे
लक्ष्मन पुरी नगर मसान मध्ये गोमती तट मैलाकुण्ड क्षेत्रे
सूर्य सौम्यायने शिशिर ऋतुः मासानां मासोत्तमे मासे
फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्याम तिथौ चन्द्रवासरे
स्वाती नक्षत्रे तदुपरि विशाखा नक्षत्रे व्याघात योगे
तदुपरि हर्षण योगे बव करणे तदुपरि बालव करणे
मीन राशिस्थिते सूर्ये वृश्चिक राशिस्थिते गुरौ शेषेषु
ग्रहेषु यथा २ स्थान स्थितेषु एवं ग्रह गण विशेषण
विशिष्टायां अहं कमला सरकार नामाहं ब्राह्मण गोत्रो
त्पन्न अन्धृतं धर्मार्थ काम मोक्षा
र्थं प्राप्ति कामः श्री महा काली देव्या मन्त्र
दीक्षा ग्रहण करिष्ये। (अथवा निज यजमान
स्य ग्रहेषु सकल भूत प्रेत पिशाचादि बाधा
निवारणार्थे महाकाली पूजन मतितर्पणं
करिष्ये। (अथवा) सकल रोग, पीड़ा, दर्द, अड़चन

पू

गणेश | ॐ ह्रीं आधार
शक्त्यै कमला
सनाय नमः | सरस्वती

उत्त | | दक्षिण

क्षेत्रपाल | प | दुर्गा

श्री कालिका आवाहन

॥ ध्यानं ॥

करालवदनां घोरां मुक्त केशीं चतुर्भुजां कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्ड माला विभूषिताम्। सद्यश्छिन्न शिरः खड्गं वामाऽधोर्ध्व कराम्बुजाम। अभयं वरदं चैव दक्षिणोर्ध्वाऽधो पाणिकाम्। महा-मेघ प्रभाम् श्यामां तथा चैव दिगम्बराम। कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद् रुधिर चर्चिताम कर्णावतंशतानीत शव युग्म भयानकाम्। घोर द्रंष्ट्रां ललज्जिह्वां पीनोन्नत पयोधराम्। शवानां कर संघातै कृत कांची हसन्मुखीम॥ सृक्कद्वय गलद रक्त धारा विस्फुरिताननाम घोर रावां महारौद्रीं श्मशानालय वासि-नीम्। बालर्क मण्डलाकार लोचन त्रया-न्विताम। [illegible] दन्तुरां दक्षिणा व्यापि-मुक्ता लम्बिक चोच्चताम॥ शव रूप-महादेव हृदयोपरि संस्थिताम्। महाका-लेन च समं विपरीतरतातुराम॥ शिवाभि घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम्॥

सुख प्रसन्न वदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।।
योगिनी चक्र संहितां कालिकां भावयेत सदा।
एवं संचिन्तयेत काली सर्व कामार्थ सिद्धये।
ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायै, आवाहयामि-
स्थापयामि इहागच्छ इहतिष्ठ संन्निधौहि-
भव कालिकायै नमः ।।

।।श्री तारा माई का ध्यान, आवाहन ।।

ॐ प्रत्यालीढ़ पदां घोरां मुण्डमाला-
विभूषितां । खड्ग कर्त्री समायोगे सव्ये
तर भुजद्वयाम् ।। कपालोत्पल
संयुक्तम् सव्य पाणि युगान्विताम् । पिंगोग्रैक
जटां ध्यायेन मौलावक्षोभ्य भूषिताम् ।
अक्षोभ्योहर मूर्द्धन्यस्त्रिमूर्ति नाग रूप धृक ।
चन्द्र सूर्याग्नि नयनां मद्य पान प्रमत्तिकाम ।।
प्रत्यालीढ़ पदार्पितांघ्रि शव घोराट्टहासापरा ।
खड्गेन्दीवर कर्त्री खर्पर भुजा हुंकार बीजो-
द्भवा ।। खर्वा नील बिशाल पिंगल
जटा जूटोग्र नागैर्वृता ।। जाड्यम् न्यस्य
कपालके त्रिजगतां हन्त्युग्र तारा स्वयम् ।।
प्रत्यालीढ़ पदां देवीं महामायां त्रिलोचनाम् ।
सर्वालंकार भूषाढ्याम् महानील प्रभां परां ।।
खण्डं पाशं दक्षिणे च वामेन्दी वरसूचितः ।
दधकं चषकं देव्या भावयेत साधकोत्तमा ।।
घोर हास्यां महादेवीं तारिणीं तार रूपिणीम् ।।

सुख प्रसन्न वदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।।
योगिनी चक्र संहितां कालिकां भावयेत सदा।
एवं संचिन्तयेत काली सर्व कामार्थ सिद्धये।
ॐ भूर्भुवः स्वः कालिकायै, आवाहयामि -
स्थापयामि इहागच्छ इहतिष्ठ संन्निधेहि -
भव कालिकायै नमः ।।

॥श्री तारा माई का ध्यान, आवाहन॥

ॐ प्रत्यालीढ़ पदां घोरां मुण्डमाला-
विभूषितां। खड्ग कर्त्री समायोगे सव्ये
तर भुजद्वयाम्॥ कपालोत्पल [redacted]
संयुक्तम् सव्य पाणि युगान्विताम्। पिंगोग्रैक
जटां ध्यायेन मौलावक्षोभ्य भूषिताम्।
अक्षोभ्योहर मूर्द्धन्यस्त्रिमूर्ति नाग रूप धृक।
चन्द्र सूर्याग्नि नयनां मद्य पान प्रमत्तिकाम॥
प्रत्यालीढ़ पदार्पितांघ्रि शव घोराट्टहासापरा।
खड्गेन्दीवर कर्त्री खर्पर भुजा हुंकार बीजो-
द्भवा॥ खर्वा नील बिशाल पिंगल [redacted]
जटा जूटोग्र नागैर्वृता॥ जाड्यम् न्यस्य
कपालके त्रिजगतां हन्त्युग्र तारा स्वयम्॥
प्रत्यालीढ़ पदां देवीं महामायां त्रिलोचनोम्।
सर्वालंकार भूषाढ्याम् महानील प्रभां परां॥
खण्डं पाशं दक्षिणे च वामेन्दीवरसूक्षितः
दधकं चषकं देव्या भावयेत साधकोत्तमा॥
घोर हास्यां महादेवीं तारिणीं तार रूपिणीम्॥

चषकेन्दी वरं चैव खड्गं चापि वरं तथा ॥ व्याघ्र चर्म परीधानां सर्वालंकार भूषितां। वक्षसा नागहाराढ्य महाभोग स्वरूपिणीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐं तारायै नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, इहागच्छ इहा-तिष्ठ, सन्निधेहि भव ॥

सूर्य याम्यायने वर्षा ऋतु: भाद्र
मासे कृष्ण पक्षे चन्द्र वासरे
अष्टम्याम तिथौ कृतिका नक्षत्रे
तदुपरि रोहिणी नक्षत्रे व्याघात योगे बव
वालव करणे तदुपरि कौलव करणे सिंह राशिस्थिते
सूर्ये मकर राशिस्थिते गुरौ शेषेसु गृहेषु
यथा २ स्थान स्थितेषु सत्सु सर्व गृहगण
विशेषण विशिष्टायां अहं कमलासरला
नामाहं अवधूत जाति कौलोहं शाम्भव
गोत्रोत्पन्नम श्री आद्या शक्ति शवारूढ
प्रसन्नार्थं गुरु देवता प्रसन्नार्थं भाद्रप
कृष्णाष्टमी जन्मोत्सव उपलक्षे मसान
मध्ये सर्व देवता देवी सहितं पूजन बलि
तर्पण करिष्ये

सो

लक्ष्मण पुरी नगरे भैंसा कुण्ड क्षेत्रे
मसान मध्ये गोमती तट सूर्य [illegible] स्थापन

श्री बाला त्रिपुर सुंदरी का ध्यान -

॥ आवाहन ॥

वालार्क मण्डला भाषां चतुर्वाहु त्रिलोचनां। पाशांकुश धनुर्वाण धारयन्ति शिवांश्रये॥ वाले वाल दिनेश कोटि रुचिरे वालार्क बिम्बाधरे॥ पाशे स्वास शरांकुशन्वित करे वालेन्दु राट शेखरे। हाला घूर्णित लोचनत्रय नाना विभूषान्विते। ऐं ह्रीं सौः बाला-त्रिपुरा देव्यै शिव सहितां नमस्यामि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बाला त्रिपुरा देव्यै शिव सहितां आवाहयामि, चित्त मध्ये स्थापयामि, इहागच्छ इहातिष्ठ संन्निधेहि भव॥

" पात्र वन्दना "

श्यामे श्याम रते शवासनगते मुण्डाब्ज मालावृते सशवन्मुक्त कचे कारावृतकटि प्रान्ते विमुक्ताम्बरे। खड्गाच्छिन्न शिरो वराभय करे शवावतंसे मुदा। पात्रं त्वं प्रथम गृहाण सुधया पूर्णादयाधीयताम्" कां कालिकायै प्रथम पात्रं समर्पयामि"

(२) तारे तार कुचे सवासनगते रक्त त्रिनेत्रान्विते। पिंगोग्रैक जटाविकास वदने शार्दूल चर्मावृते। खर्वे कर्तरि कास मुण्डे नलिने राजत्करे नीलमे "

मातः पात्रमिदं गृहाण सुधया पूर्णद्वितियं मुदा। ऐं तारायै द्वितिये पात्रंसमर्पयामि"

(३) बाल बाल दिनेश कोटि रुचिरे बालार्कविम्बाम्बरे पासे स्वासरां कुशान्वित करे बालेन्दु राट शेखरे

हाला घूर्णित लोचनत्रिय युत नाना
विभूषान्विते। पात्रं पूर्णमिदं गृहाण
सुधया मातस्तृतियंमुदा। श्री बाला
त्रिपुरा देव्यै तृतियं पात्रं समर्पयामि ॥

(४) श्रोणे श्री भुवनेश्वरी त्रिनयने बन्धूक
पुष्पाम्बरे पाश भीति वरांकुशान्वित
करे तारेश भालस्थले। कांची कुण्डल
कंकणांगद रण मंजीर हारोज्वले।
पीनो तुङ्ग कुचे सहासवदने पात्रंचतुर्थं
भजे। श्री भुवनेश्वरी देव्यै पात्रं
समर्पयामि ॥

(५) मात(भैरवी शोणमे शशिधरे स्मेरानने तीक्ष्णे । रक्तालिप्त कुचान्ते शोण बदने मुण्डाब्ज मालाधरे ।
विद्या मीति बरांस्तथा जपवटीं हस्तैर्द धाने शिवे पात्रं वारिजगे गृहाण सुधया पूर्ण मुद्रा पंचमम् । भैं भैरव्यै देव्यै पात्रं समर्पयामि ।

(६) देवी छिन्नगले पतत्व रुधिरं तापं बिभूतानम् । मालं मुक्त कचं निज निज करे बामे दधाने मुद्रा ॥
भानु स्वर-मौ समीक्ष्य च निज सख्यौ चा मोदान्विते पात्रं स्वीकुरु षष्ठमेतदमलं मातः सुधा पूरितं छिन्नमस्ता देव्ये पात्रं समर्पयामि ॥

(७) धूमे रुक्ष बिलोचनत्रय युते क्षुद्व्याकुले
चंचले। दुश्चित्ते ऽरि भयावहे कोतिरते
म्लानाम्बरे रुक्षाभे नित्यं मुक्त शिरोरुहे
सुदर्शने सूर्पो[illegible]रे स्वोदिते ॥ पात्रं
सम्प्रामिदं गृहण सुधया पूरितमम् ॥
धूं धूमावती देव्यै पात्रं समर्पयामि ॥

(८) माता श्री बगलामुखी त्रिनयने
स्वर्णाम्बरे स्वर्णाभे सौवर्णासनगे
सुधांशु मुकुटे चम्पस्त्रजा सुप्रभे
पाशं मुद्गरकं विशालरसना वज्रं
दधाने नाना भूषण भूषिते प्रियतमं
पात्रं गृहाणास्वकम् [illegible]

श्री बगलामुखी देव्यै पात्रं समर्पयामि

(९) मातंगी श्याम देहे शुकुकल लपिते
सावधाने दधाने पाथो ब्जे पादमेकं
मधुमद मुदिते शंख पात्रा वतंसे। बीणा
वादानुरक्ते ऽरुणा लसित पटे रत्न
पीठे परिष्ठिते। माता स्वीकार्य
मेतन्नव ममालिमृतं पात्रं प्रवध्द
मौलिं मातांगी देव्यै नवमपात्रं
समर्पयामि ॥

(१०) माता श्री कमले कमले सरोरुहेगते
स्मेरानना मोरुहे कज्जद्वये
वराभयान्वित करे विद्युद
विलासोज्वले पीनोतुङ्ग कुचे

कटाक्षे विभवैश्चैव
मुरारेर्वशं कुर्वाणो दशमं गृहाण
विमलं पात्रं सुहरान्विते कं
कमलायै देव्यै दशमं पात्रं समर्पयामि

(11) महादेवं नाग निवद्धा सुन्दर जटा
हस्तैः कृपाणामये विभ्राणां
त्रिशिखं वरं त्रिनयनं स्मेरपंचाननम्
सुश्वेतं शशिलहो परिगतं
चर्माम्बराम्बराम् । शम्भो पात्र
महं ददामि सुधया चैकादशं
पूरितम् । शं शम्भो पात्रं समर्पयामि

(12) नाना भूषण भूषितं त्रिनयनम् ।

लम्बोदरम् तुंदिलं प्रोद्यति कोटि
दिवाकरद्युति निभं मातंगवक्त्रो
ज्वलं विद्याढ्यं दशबाहुमेकं दशनं
राकेश भालस्थलम् ॥ दिव्यं द्वादशं
उत्तमोत्तम मह पात्रगणेशं भजे ॥
गं गणेशाय नमः पात्रं समर्पयामि ॥
(१३) शोण प्रोत सुकुण्डलं त्रिनयनं दंडं
त्रिशुलायुधं भूषण पुंज विराजमान
नव पुरुषं कर्पूर पुंजोज्वलम् ॥
बालं श्री बटुकं प्रसन्नवदनं प्रियं ॥
स्वेच्छाम्बरोल्लासितम् ॥ पात्रं स्वाद
रसं त्रियोदशं मह सुग्राह्यामि
ह्रीं बं बटुकाय नमः पात्रं समर्पयामि ॥

(१४) सिंदूरारुणवस्त्र लेपनधरं

हुंकाराभिमानमम् श्यामं
मेघर सन्निभं त्रिनयनम् ॥
सर्पोल्लासि कुण्डलम् ॥ घण्टा
स्वच्छ कपाल भूषितं कटिदंडं
दधानम् ॥ क्षेत्राधीश मह
चतुर्दश मिदं पात्रं समर्पयामि
क्षें क्षेत्रपालाय नमः

(१५) योगिन्यो मद मन्थराः कुलपराः
स्मेरानना भोरुहा रक्ता
लेपनवस्त्र भूषणधराः
कार्तस्वराः स्वेच्छाकार सार

चतुरः प्राज्य प्रमोदान्विता पात्रं
पंच दशं सुधारस्मृतं गृहणन्तु
दत्तंमया । यां योगानि[illegible]: पात्र
समर्पयामि ॥

(१६) निर्द्वन्द नित्य शुद्धे निरवाधि
निस्वरुपे, निरीहे निर्भये ।
निश्कलंके निरुपम विषये ।
निर्गुणे निर्विकारे स्वेक्षानुभुते ॥
परतराशिवे षोडशपात्रं मेतं पूर्णां
विज्ञानावादा विमलतं मतं स्वच्छ
वृतिं जुहोमि। परा[illegible] पात्रं
समर्पयामि नमः

॥ कुण्ड वन्दना ॥

7 भुवनेश्वरी च कमला श्री
राजेश्वरी पूर्णा। भैरव भैरवी च
बटुकं वराह तथा कालिका पूरी॥
श्री बगला च धूम वदना। श्री छिन्न
मस्ता अम्बिका पूर्णा श्री
पादुकां ॐ कुण्डाय नमः

॥ कीलन ॥ सरसों चारों तरफ फेंके
ॐ उग्रवीरं महा विष्णुः ज्वलन्तं
सर्वतो मुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं
मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्॥

(१) क्रीं कालिकाये । शिव सहिता पादुका पूजियामि नमः
(२) ऐं ताराये । शिव सहितां पादुकां पूजियामि नमः ।।
(३) ऐं क्लीं सौः बाला त्रिपुरा देव्यै शिव सहितां ।। पादुकां।
(४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हस्खफ्रें हसौं हसक्षमलवरयूं सः
हसखफ्रें सहौं सहक्षमलवर यीं हसौं गुरु शक्ति
सहितं पादुकां पूजियामि नमः ।
(५) परम गुरु) (परात्पर गुरु) (परमेष्ठी गुरु) (आदि गुरु का) पूजन करें।
(६) ॐ ह्यौं श्मशानाधिपते शक्ति सहितां पादुकां
पूजियामि नमः।।
(७) ॐ हूं महा काल भैरवाय शक्ति सहितां पादुकां०
(८) ॐ हूं महा कालाय नमः शक्ति सहितां पादुकां०
(९) ॐ ह्रीं भैरव नायक शक्ति सहितां पादुकां ०
(१०) ॐ ह्यौं भूतनाथ श्मशानाधिपतये नमः शक्ति
(११) हुं सर्व गण नाथाधिपतये नमः शक्ति सहितां ०
(१२) ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः शक्ति सहितां ०
(१३) ॐ ह्रीं बटुक भैरवाय नमः शक्ति सहितां ०
(१४) ॐ ह्रीं गं गणपते नमः शक्ति सहितां पादुकां ०

(१५) ॐ क्षें क्षेत्र पालाय नमः शक्ति सहितां

(१६) ॐ ह्रीं दश दिक्पालाय नमः शक्ति सहितां।

(१७) ॐ ह्रीं पंच प्रेताय नमः शक्ति सहितां पादुकां।

(१८) ॐ ह्रीं हसक्षमलवरयूं आनन्द भैरवाय नमः
शक्ति सहितां पादुकां पूजयामि नमः॥

(१९) ॐ ह्रीं षोडश मातृकायै नमः शिव सहितां पादुकां।

(२०) ॐ ह्रीं सप्त मातृकायै नमः शिव सहितां।

(२१) ॐ ह्रीं चौषठ योगिन्यै नमः शिव सहितां।

(२२) ॐ ह्रीं शिवायै नमः शिव सहितां पादुकां।

२६० वरा
१४ वली एक को — २६० पूरी, दो दो धरो
४ वली पांच २ को — १३० मिठाई
१६ वलि एक में — २६० फूल दो दो
७ वलि एक में — १३० फल की गोट
६४ वलि एक में
८ वलि एक में
१२२

रुद्र गायत्री - ॐ तत्पुरुषाय
विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

अघोर मंत्र :- अघोरेभ्योऽ
घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्य
सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते
अस्तु रुद्र ~~रूपेभ्यो~~ रूपेभ्यः

रुद्र गायत्री - ॐ तत्पुरुषाय
विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्

अघोर मंत्र :- अघोरेभ्योऽथ
घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्य
सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते
अस्तु रुद्र ~~रूपेभ्यो~~ रूपेभ्यः

जाप मंत्र ११ हजार

रुद्राय

ॐ नमो भगवते, महा ~~रुद्राय~~ काल भैरवाय
हुँ फट् स्वाहा

ॐ क्लीं क्लीं महाकाल
भैरवाय नमः

यह सुदर्शन मंत्र है

सरसों बिखेरने का मंत्र

ॐ उग्रं बीरं महा विष्णु
ज्वलंतम् सर्वतो मुखं
नरसिंहं ~~[illegible]~~ भीषणं
भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहं

इस मन्त्र को सिद्धी होली दिवाली शिवरात्री
मे १०८ माला करें

महाकाल भैरव सिद्धि

मूल मंत्र :- ॐ ह्रीं भूतनाथाय हूं महा काल भैरवाय नमः

साधन सिद्धि करना :-
एक चौमुखा दिया देसी घी का दीपक जला कर दीपक छूते हुये १०८ बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करें, अमावस की रात को या कृष्ण पक्ष की चौदस की रात को साधन शुरू करें और ११ हजार जाप कुल करना है।
साधन के द्रव्य :— एक ढाक की पत्तल पर ढाक के पत्ते की बनी ११ दोने ले कर

भोग

निम्न द्रव्य हर दोन में
रक्खे ~~प्रत्येक द्रव्य रक्खे~~

१ पहले दोन में दो गरी के सूखे गोले
दूसरे दोन में ७ साबुत नीबू
तीसरे में ७ जायफल
चौथे में सवा पाव का एक गुड़ व देसी घी
का बना रोट
पाचवे में — ७ रेहू मछली साबुत फ्राई की
६ठे में — ७ उरद के बड़े दही सहित
७ तवे में — १ पाव भुना चना
८ वे में — १ पाव गुड़
९ वे में — ७ उड़द भरी कचौड़ी
१० वे में — ७ नग मिठाई मिली जुली
११ वे में — ७ केले छिले हुये
१२ वे में — चरवण

निम्न पूजन द्रव्य

पीला सिंदूर, लाल फूल, काजल (अमावस की रात में तेल के दीप से परा काजल) पाद्य अर्घ्य सुगंधित जल से आचमन सुगंधित जल से स्नान कराण से फिर पीला सिंदूर टीको बीच में लाल सिंदूर टीको टीके के नीचे काजल का बिन्दू टीको फिर स्वेत १४ फूल चढ़ावे मदार = आगज के फूल हो तो ज्यादा अच्छा है। फिर स्वेत पुष्प की माला बेल या किसी सुगंधित स्वेत पुष्प की माला चढ़ावे, फिर खस का इतर रुई में लगा कर चढ़ावे, फिर काली चुन्नी या लाल चुन्नी चढ़ावें और एक लाल झंडी

नोट सभी द्रव्य कारण से प्रोक्षित करके
पहले से रखके द्रव्य चढ़ाते समय भी
प्रोक्षित करके ११ - ११ बार हर द्रव्य को
अभिमंत्रित करें

डंडी में लगी ~~हुई~~ चढ़ाई
फिर अगरबत्ती दी या कोई
अच्छी धूप दें फिर कपूर
व देशी घी की आरती
करे। फिर भोग द्रव्य
निम्न क्रम से चढ़ाइये। —
७ कचौड़ी दाल वाली, ७ दहीबड़ा
१ रोट, भुना चना, गुड़, फल ७
७ मिष्ठान, ७ रेहू मछली,
चरवण, ३ पात्र कारण
या एक बोतल कारण
कारण एक हण्डी (हाँड़िया)
में या ताम्र पात्र में भरकर
आधार शक्ति पर रखकर
और कारण शोधन करें।

बलि → जायफल, नीबू गोला)

स शोभित करके मंत्र ॐ अमृतं २ जुहोमि स्वाहा १०८ बार कारण पर पढ़ दें व मुद्रायें दिखावें किन्तु पात्र भरने के समय फट फट कहकर पात्र भरे)

नोट :- पूजन के साथ हर द्रव्य चढ़ाते समय व इण्डी का पूर्ण कारण तीन बार में करके चढ़ावें

अनामा (.....~~कनिष्ठका~~ (Ring finger) का स्पर्श) अनामिका ~~फिर पुनः~~

तीनों बली तीनों कारण, फिर चार पान लौंग इलाइची, के पान गांजा या भाग भी चढ़ावे व धतूरे के फल तब गुरु शुद्धि फिर २४ स्तोत्र पुष्प से मंत्रों से पुष्पांजलि इस सब को करना

के पश्चात ११ हजार इसी
मंत्र का जाप करे जाप पूरा
होने के बाद एक दूसरी हंडी
में सवा सेर, काली गाय का दूध
फट फट करते हुये बन
और आधार शक्ति पत्ते पर
इसका प्रयोग होगा बनाना।
दूध में सेंधा नमक १ छटाक
भी डाल दे और फिर वो
उल्लू को दर के दो टुकड़े
करके मंत्र पढ़ते हुये दूध
में डाल दे फिर से बली
भी तैयार करके तीन बार
मूल (उपरोक्त) मंत्र से चिता
में चढ़ा दे और एक कन्ने

का फूल चिता में भेंट करदे या
फिर १४ स्वेत फूल चढ़ादे
और चिता की तीन प्रदक्षिणा
मूल मंत्र करते हुये करे और
प्रणाम करे और अन्त में
उसी की चिता भस्म लेता
हुआ चला आवे /

हूं महाकाल भैरवाय नमः
क्लीं महा कालिकाय नमः
दोनों

हुं महाकाल भैरवाय
शक्ति सहितं पादुकां
पूजयामि नमः
बलि तर्पण
ॐ हुं महा काल भैरवाय शक्ति
सहितं इमं सामिषान्न बलि
तर्पण पूजां गृहण २ सर्व भूत
प्रेतादि पीर मसान जिन्नादि
विघ्न निवारय २ सम्मोता देवै
गुप्ताये रक्ष रक्ष शान्तिं देहि २
हुं महाकाल भैरवाय नमः

संकल्प

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णु: नम: परब्रह्मने
आद्या ब्रह्मणे द्वितीय परार्धे श्री
श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत
मनवन्तरे अष्टाविंशततमे कलि
युगे - कलि प्रथम चरणे जम्बू
द्वीपे भारत वर्षे भारत खण्डे
आर्या वर्ते आर्या वर्तान्तर गत
लक्ष्मण पुरी नगरे गोमती तटे
भैसाकुण्ड क्षेत्रे मसान मध्ये
माता कालिकायै सन्मुखे गुरुदेवस्य
सन्मुखे सूर्य याम्यायने सौम्य
गोला वर्षा ऋतु: मासानं मासोत्त
मे भाद्र मासे कृष्ण पक्षे बुध
वासरे सप्तम्यां तिथौ

तदुपरि अमुक्यां तिथौ कृतिका
नक्षत्रे तदुपरि रोहिणीनक्षत्रे
हर्षण योगे बव करणे तदुपरि
बालव करणे सिंह राशास्थिते
सूर्ये धन राशास्थिते गुरौ
शेषेषु ग्रहेषु यथा २ स्थान
स्थितेषु सत्सु एवं गृहगण
विशेषण विशिष्टायां अहं
कमला सरकार नामा हं साम्भव
गोत्रोत्पन्न अवधूत जात सुनीत
देव्यै गुप्तायै नरही क्षेत्र
लक्ष्मण पुरी नगर निवासिनी
मम यजमानस्य गृहे एवं
देहोपरि

पिशाच
भूत प्रेत, राक्षस कलुवा पीर मसान
बीर भैरव जिन्नात अघोर अघोरी
औघड़ादि कृत विघन निवार्णार्थे
पर प्रयोग विनाशनार्थे शीघ्र
आरोग्यता प्राप्त्यर्थे श्री सवारुढ़ा
(कालिका देव्यै) तारा देव्यै त्रिपुर
काल भैरव देवतस्य)
सुन्दर्यै मसान मध्ये सर्व देवतस्य
पूजनं वलि तर्पणं करिष्यामि

"मुद्रा शोधन विधि"

शुरु में एक फूल लेकर भैरव जी का ध्यान = तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं नुज्ञाम् दातुं मर्हषी॥ बोलकर ईशान में चढ़ादे

"आसन के नीचे"

एक फिर त्रिकोण षट्कोण वृत्त चतु- ष्कोण - बनावे बीच में ह्सौं लिखदे

~~ईशान पूर्व में गणेश नैरृत्य में सरस्वती~~

(ईशान में गणेश आग्नेय में सरस्वती नैरृत्य में दुर्गाजी वायव्य में क्षेत्रपाल पश्चिम में पुजारी बैठे)

जल से आसन प्रोक्षण करे फट् 3 बोलकर। फिर आधार शक्ति का पूजन करे। ॐ ह्रीं आधार शक्तये कमलासनाय नमः

पश्चात् तिल चावल जौ मिला कर चारों तरफ बिखेरता जाय, और यह बोलता जाय।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वत: स्थानं त्यत्वा तु तत सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छति।
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले संस्थिता। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु ये भूता पिशाच: सर्वतो दिशा। सर्वेषाम विरोधेन समारभेत्।

फिर आचमनी, पृथ्वी का विनियोग,

आसुरेरवे वज्र रेरवे हुं फट् स्वाहा।

पृथ्वी त्वया धृतालोका, देवीत्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारयते मामं देवि पवित्रं कुरु च आसनम्।

पश्चात् तिल चावल जौ मिला कर चारों तरफ बिखेरता जाय और यह बोलता जाय।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वत: स्थानं त्यक्त्वा तु तत सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छति।
अपक्रामन्तु ये भूता ये भूता भूतले संस्थिता। ये भूता विघ्नकार्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु ये भूता पिशाच: सर्वतो दिशा। सर्वेषाम विरोधेन समारभेत्।
फिर आचमनी, पृथ्वी का विनियोग।

आसुरेरवे वज्र रेखे हुं फट् स्वाहा।
पृथ्वी त्वया धृतालोका, देवीत्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारयते माम् देवि पवित्रं कुरु च आसनम्।

फट् 3 करके त्रिपदी धोवे आधारपर रक्खके त्रिपदी में अग्नि मण्डल का पूजन करे। (रं वह्नि मण्डलाय धर्मप्रद दश कलात्मने नमः) फिर कलश धोके

नमः 3 बोल कर त्रिपदीपर कलश धरे कलश के ऊपर सूर्य मण्डलका

पूजन करे। (ॐ अं अर्क मण्डलाय अर्थप्रद द्वादश कलात्मने नमः)

फिर सोम मण्डल का पूजन करे।

(ॐ उं सोम मण्डलाय कामप्रद षोडश कलात्मने नमः फिर गंगाजी का ध्यान करे। कलश कारणसे भरे

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिं कुरु।

अंकुश मुद्रा से उंगली घुमावे

कारसा में 3 बार
वौषट् बोल कर (कारसा देखे
फट् बोल कर (रक्षा करे
वषट बोलकर (शुद्द करे
स्वाहा बोल कर (पुजन करे

फिर दश दोष निवारण करे

1) ऊं ह्रीं ऐं श्रीं गीं हसरक्फ्रें पार्थिक देवताभ्यो हुं फट् स्वाहा

2) ऊं ह्रीं हसरक्फ्रें अस्फालि ग्राम चंडालिनी हुं फट् स्वाहा

3) ऊं ह्रीं हसरक्फ्रें स्पर्श चंडालिनी हुं फट् स्वाहा

4) ऊं ह्रीं श्रीं हसरक्फ्रें दृष्टि चंडालिनी हुं फट् स्वाहा

5) ऊं ह्रीं श्रीं हसरक्फ्रें क्रोध चंडालिनी हुं फट् स्वाहा

6) ऊं ह्रीं श्रीं हसरक्फ्रें सृष्टि चंडालिनी हुं फट् स्वाहा

७) ॐ ह्रीं श्रीं क्रों क्रो क्लीं हसरव्फ्रें तपन
वेधे घट चण्डालिनी हुं फट् स्वाहा

८) ॐ ह्रीं श्रीं हसरव्फ्रें तपन वेध चंडालिनी
हुं फट् स्वाहा

९) ॐ ह्रीं श्रीं हसरव्फ्रें निर्दोष चंडालिनी हुं
फट् स्वाहा

स्वाहा
१०) ॐ ह्रीं श्रीं पशु पाश चंडालिनी हुं फट्।
तीन बार

ॐ छां छीं छूं छैं छौं छः। छुरिके ज्वालि
शोभने विकाराग्र अस्य द्रव्यस्य हर २
स्वाहा

शाप विमोचन मन्त्र॥
ॐ एक मेव पर ब्रह्म स्थूल सूक्ष्म मयं
ध्रुवं। कचोद्भवां ब्रह्म हत्यां तेन ते
नमाम्यहम्।

ॐ वेदानां प्रणवो बीज ब्रह्मानन्द मयं
यदि तेन सत्येन हे देवि ब्रह्म शाप
व्यपोहतु (ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्म
शापविमोचतायै सुधा देव्यै नमः (१० वार

ॐ सूर्य मण्डल संभूते वरुणालये सम्भवे
अमां बीज मये देवि शुक्र शापाद् विमुच्यताम्
ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्र शापाद् विमोच
तायै - सुधा देव्यै नमः १२ वार पढ़े

ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे कृष्णा
शाप विमोचय २ अमृतं स्रावय २ स्वाहा
१२ वार पढ़े ।

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्र शाप विमोचतायै
सुधा देव्यै नमः १२ वार पढ़े

ॐ पवमानः परमानन्दः पवमानः परोरसः ।
पवमानं परमज्ञानं तेनते पावयाम्यहम् ॥
3 वार जपे

ॐ कृष्ण शाप विमुक्तात्वं विमुक्ता
ब्रह्म शापतः विमुक्ता रुद्र शापश्च
पविश्रा भव साम्प्रतम्। ३ बार जपे

तिरस्करणी विद्या

नीलरूपं समधिरुह्यं पराप्रयान्ति
नीलां शुकाम्बरराम लः विलेपनाढ्यम्
निद्रा पटेन भुवनानि निरोदधाना।
खड्गायुधा परिपातु भक्तान। ॐ
ह्रीं श्रीं भगवती महेश्वरी सर्व पशु जन
मनः चक्षुः तिरस्कररणं कुरु २ स्वाहा
ॐ ह्रीं परम प्रकाशिनी परमाकाश शून्य
निवासिनी सूर्य चंद्राग्नि भक्षणि पात्रं
विश विश स्वाहा। कलश पर लाल
कपड़ा उढ़ादे लाल फूल माला चढ़ादे।

कलश में लाल रोली या चन्दन मल दो चारों ओर अब उस सुरा को देवी रूप मानो। फिर सोम मण्डल का पूजन करो।

ॐ उं सोम मण्डलाय अर्घ प्रद शोडष कलात्मने नमः। सुरा मध्य में

त्रिकोण में पूजन करे 'हसौं मण्डलाय नमः' और आनन्द भैरव का ध्यान

ॐ सूर्य कोटि प्रतीकाशम चन्द्र कोटि सुशीतलं। अष्टादश भुजं देवं पंच वक्त्राय त्रिलोचनम्। वृषारुढ़ नील कण्ठं सर्वाभरण भूषितम्। खड़्ग धर घण्टा डमरु वादनम्॥ पाशांकुश धरं देवं गदा मूसल धारिणम्। खड़्ग खेटक पट्टीशं मुग्दरं शूलदण्ड धृक

विचित्र खेटक मुण्ड वरदाभय
धारिणम । लोहितं देव देवेशं
भावयेत साधकोत्तम् । ॐ हसक्षमलवर
यं ॐ हसरव्फ्रें सहौं सहक्षमलवरयीं
आनन्द भैरवाय शक्ति सहितं
पादुकां पूजियामि ॥ ॐ भावेच्च
सुधा देवीं चन्द्र कोटि युतप्रभाम् ।
हिमकुन्देन्दु धवलां पंचवक्त्राम
त्रिलोचनाम अष्टादशभुजै
युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम् ॥
प्रहसन्ती विशालाक्षी देव देवस्य
सम्मुखीम् । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हसरव्फ्रें
हसौं हसौः हसक्षमल वरयीं आनन्द

भैरवै वौषट् आनन्द भैरवाय
शक्ति सहितं नमस्तुभ्यं।

त्रिकोण विन्दु पर मुण्ड ऊपर अष्टदल पूजन
चिराग चौमुखा अष्टदल पर दीप पूजन मुण्ड
पूजन आवाहन देवता का कार्य संकल्प करे
फिर पंच मन्त्र से पूजन मुण्ड का, धूप दीप,
नैवेद्य आचमन पान भेंट दे पुष्पांजली दे
तब माला करे १५ हजार मन्त्र दशांश हवन
तर्पन मार्जन करे ४१ दिन तक में करले
चाहे तीन दिन में करले कुल १५ हजार जप
करता है। जितना जप उसका दशांश हवन
करता जाय। दिगम्बर होकर करे या
बिना की सिला चोला पहन कर बैठे,
उत्तर मुख कर के बैठे। इस मन्त्र को
ही जपे जो गुरु ने दिया हो।

दुर्गा जी का पूजन को

(1) यदि रक्त की बीमारी किसी को हो तो १५ सौ आहुति आक के पत्ते या फूल कारण में डुबा डुबा कर हवन करे आक की समिधा हो।

(2) कफ की बीमारी में १५ सौ आहुति बेल के पत्तों से बेल की समिधा में हवन करे कारण में डुबा के

(3) वायु की बीमारी में नीम की पत्ती नीम की समिधा सों कारण से हवन कर दे १५ सो

मार् मंत्र से मुण्ड को मारण से धोवे तब त्रिकोण पर रक्खे

" पूजन प्रयोग विधि "

हवन सामिग्री तिल जौ चावल में चीनी डालदे मारण दे उसमें उसी से गीला करले घी नही पड़ेगा। जिस चीज को बलि दे उसे चावल के साथ एक हांडी में पकाके उसी हवी में मिलाकर हवन करदे। मुण्ड के सामने हवन करे पीलसरसों १ पाव दोने में भरकर रख दे मुण्ड के सामने। १५ हजार जप बैठ कर मुण्ड के सामने करे। दशांश १५ सौ आहुति दे हवी से। तर्पण मार्जन भी करे। फिर एक कपाल में २५ ग्राम चावल मारण में पकाले उसे मुण्ड को भोग लगावे | वही भोग थोड़ा सा घर ले आवे। लोक कार्य में इस्तमाल करे संकल्पानुसार। पश्चात मुण्ड विसर्जन करे यदि मुण्ड घर ले आवे तो उसे रोज मारण देता रहे

बलि को १ नारियल की दे दे। पूरा तोड़ २ के हवन में डालदे और जायफल भी डालदे।

काली का यदि मुण्ड में आवाहन करना हो तो अष्ट कमल दल मुण्ड पर बनाना चाहिये। महाकाल के आवाहन में मुण्ड पर षट्कोण बनावे। उत्तर मुख कर के बैठे।

"महाकाल की कपाल साधन"

प्रेताधि पती प्रेतानां पशुनां पशुपती
रक्षन्ती श्मशानालय सर्व बाधा प्रशमनम
सर्व काम प्रदायने रक्षन्ताम् महा काले
सर्वे गण। पुजिते महा रक्षति मम बन्धनाय

कार्य का संकल्प करने पहले। पूजन के पहले।

दन्त सहित मुण्ड होवे तो ठीक है। त्रिकोण पर उस मुण्ड को रक्खे, अष्ट दल कमल मुण्ड पर सिन्दूर से तेल में सानकर बनावे उसपर मिट्टी का चिराग

चौमुखा जलादे। मुण्ड के माथे पर काजल का तिलक करे सिन्दूर पीला लगावे माथे पर अक्षत लाल फूल धूप दीप पंचमकार का नैवेद्य दे। मुखमें पुष्पांजली दे। प्रार्थना करे।

मुण्ड के सामने १पाव पीली सरसों रख दे पूजन करते समय उसे इष्ट मन्त्र से १०८ बार जप दे या जो जप १५ हजार जपोगे उसी से वह मन्त्रित हो जायेगा। लौटते समय उसी में से पीछे डालके आगे बढ़ जल्दी स्मसान से निकल आवे

नीच कोटि की आत्मा

यदि भूत प्रेत जिन्नात मसान औघड़ पिशाच चुड़ैल भैरव कलुवा इनकी जांच करना हो तो यह इस तरह करे। तीन तरह की आत्मा होती हैं शूद्र यह गन्दी आत्मा होती है वातावरण पर प्रभाव करती है। जैसे बदबू मांस की बदबू टट्टी की बदबू जले मुर्दे की बदबू सिगरेट की बदबू आदि कहीं आग लगा देना पत्थर फेंकना विष्ठा फेंकना डरावनी आवाज करना सामान गायब कर देना इत्यादि २॥

मध्यम कोटि की आत्मा

यह शरीर पर प्रभाव डालती है बीमार कर देती है गुम रहती है

उत्तम कोटि की आत्मा	यह दिमाग पर प्रभाव करती है। सेन्स लेस जीव हो जाता है कुछ र होश भी रहता है पर चाह कर भी नार्मल नहीं रह पाता।
मध्य कोटि की आत्मा	यह ब्रह्म राक्षस, ब्रह्म पिशाच, ब्रह्म वीर होती है। यह शरीर पर प्रभाव करती है, नहाता धोता हर समय पूजा करता रहता है। कभी रोता है कभी हंसता है कभी अट्टहास करता है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आपदुद्धारणाय
अजामिल बद्धाय लोकेश्वराय
स्वर्णा कर्षण मम दारिद्र विद्वेषणाय
महा भैरवाय नमः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ
तीन माला रोज ४१ दिन जपे प्रतिदिन
हवन सामिग्री में कारण मिलाकर
१०८ चिता पर हवन करे ५१-५१ आहुति हो।
सब चिता पर दे। तब सिद्धि होवे "(मुख्य बात सामिग्री में कारण मिलावे

प्रयोग - मैं भैरवाय नमः अमुकस्य अमुक
कार्य सिद्धिं कुरु श्रीं ह्रीं ऐं ॐ" नगाडे
चिता पर हवन करदे १०८ बार आहुति दे

॥ महाकाल भैरव मन्त्र ॥

उज्जैन का महाकाल भैरव का मंत्र
(ॐ वं वं वं ह्रां ह्रौं महाकाल भैरवाय नमः)
महाकाल साधना में आसन के नीचे (लिंग)
लिखदे और षट्कोण बना कर बीच में
लिंग लिखे। महाकाली की पूजा में आसन
के नीचे त्रिकोण के बीच में (क्रीं) लिखदे
महालक्ष्मी के आसन के नीचे, अष्ट कमल
में बीच में (श्रीं) लिखदे।
महा सरस्वती के आसन के
(ऐं) लिख दे।

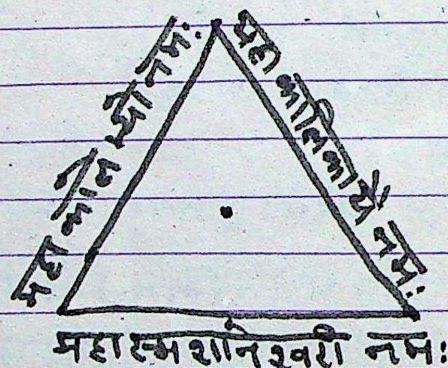
॥ पृथ्वी पूजन के मन्त्र ॥

तन्त्रसार मत

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तन स्वरूपया प्रकृति
कटि सम्भवे पृथ्वी त्वं नमस्तुभ्यं पादस्य
विश्रान्ति त्वं शिवे त्वं शिवे।

" क्षेत्र कीलन मे "
स्तुति

महा काली महा देवी सर्व श्मशान निवासिनी
समशान निवासिनी शिव शिवे समारुढा
भक्ती मुक्ती प्रदायनी रक्षन्तां सदा देवी
अमुकस्य सपरिवार: कमला सरकार नामाहं
श्यामल गोत्रकं अवधुतं स्थाने स्थापित्व
प्रदायते मम रक्षां कुरु। बोल कर त्रिकोण
मण्डल बनादे बनादे △ उर्ध्व मुख हो



डा॰ कल्पना C.4-2. लीभरवैंक कालौनी। फो॰नं॰ 249184
पिता का नाम केशी जनरेवसा साहब की पत्नी का नाम मिरली जनरेवशा।

फो.न. ४७०१९५ डा० टी. एन. शर्मा

सच्चिदानन्द मिश्र सूरज ~~घाट~~ घाट गुफा पशुपती देव पत्तन काठमाण्डू नेपाल	भोला गिरी की गुफा दशनामी अखाड़े वाले सूरजघाट पशुपती देव पत्तन काठमाण्डू (नेपाल
पगला नन्द बाबा सूरज घाट गुफा पशुपती देव पत्तन काठमाण्डू (नेपाल)	गौरजा घाट के बगल में ही सूरजा घाट है। यह श्मसान ही है।

No. 600

Rs. 7-75